आज का पुरुषार्थ 24 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज से यही पुरुषार्थ करे कि हम भी आपनी **मम्मा** की तरह अपने जीवन बनाकर सबके सामने मम्मा को प्रत्यक्ष करे "*

आज Mamma Day है। हम सभी के लिए प्रेरणा दिवस। कुछ करने की उमंग भरने का दिवस।

सचमुच भाग्यवान है हम सभी ब्रह्मावत्स जिन्हें **मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती** का साथ मिला, उनका सहयोग मिला, उनकी गाइडलाइन मिली।

लोग तो केवल भक्ति ही करते रह गये, पर हमने उनको प्राप्त किया।

वो **ज्ञान की वीणा** वजाने वाली, वो शिवबाबा की सम्पूर्ण **आज्ञाकारी**, वो इस **सृष्टि** पर महान योगिनी, सर्वस्व **त्यागी** और सभी को अपने **स्नेह** की छत्रछाया में शीतल करने वाली माँ थी हमारे।

बाबा ने उन्हें **मम्मा** ऐसे ही नहीं कह दिया था। उनमें मातृत्व था। सब धर्म की सभी आत्माओं के लिए समभाव था। वो सभी को **श्रेष्ठ प्रेरणायें** देकर कमियों से मुक्त कराती थी।

कभी किसी ने नहीं देखा कि उनके मन में ज़रा भी किसी के लिए भेद भाव रहा हो ? या किसी ने उनके सामने अपनी कमजोरी सुनाई हो और वह अपने चित पर ले ली .. कभी नहीं।

जैसे **माँ** अपनी बच्चों की सभी बातों को समा लेती है, वैसे ही वे भी सब वत्सों की सभी बातों को समा लेती थी।

बहुत ज्यादा **अन्तर्मुखी** थी। लेकिन उनके चेहरे पर एक दिव्य चमक, एक अलौकिक तेज, एक रूहानी **मुस्कान** भी सबने देखी थी।

गम्भीर इसलिए थी, **अन्तर्मुखी** इसलिए थी क्योंकि वे **निरंतर योगयुक्त** रहने की प्रैक्टिस करती थी।

अब जब ध्यान ही **निराकार परमपिता** की ओर लगा हो, तो बोलने का बाकी रहता ही क्या है?

जो कार्य व्यवहार जिसके उनके ऊपर जिम्मेदारी थी, तीन सौ अस्सी भाई बहनों की जिम्मेदारी थी, जिसमें कई बहुत छोटे बच्चे थे, अभी पढ़ते थे, जिनके भविष्य को उज्जवल बनाने की उनके ऊपर जिम्मेदारी थी, उनके लिए वे अवश्य बोलती थी।

लेकिन उनके बोल महावाक्य होते थे। उनके बोल सभी में **उमंग उत्साह** भरने वाले होते थे। और उनके बोल शिक्षात्मक नहीं लेकिन अच्छी चीजें सिखाने वाले होते थे।

वो महान योगिनी थी .. बहुत बड़ी **तपस्विनी** थी ... **त्याग** .. जिसने जीवन में अपने लिए कुछ भी नहीं चाहा। यह त्याग का पराकाष्ठा है। **मैं पन** का त्याग और अपने लिए कुछ भी तमन्ना शेष न रह जाये।

उनका **मधुर भाषी जीवन, सरल जीवन**, और मुख्य प्रेरणा जो हम उनसे लेते है... ->

सम्पूर्ण पवित्रता .. वो माँ थी, सब आत्मा के लिए आत्मिक दृष्टि थी उनके पास।

.. यही प्रेरणा हम भी ले ले। हम भी तो पूर्वज है। सबका कल्याण करने वाल। सभी आत्माओं के बड़े है हम ..

" हम अपने दृष्टि और वृत्तियों को आज सम्पूर्ण पवित्र बनाने का एक सुन्दर संकल्प कर ले "

वे सभी को सहयोग भी बहुत देती थी .. हम भी सबके **सहयोगी** बन जाये।

वो सदा स्वमानधारी थी। अपने ईश्वरीय नशें में मग्न रहने वाली वो महान आत्मा थी। हम भी ऐसी ही प्रेरणायें आज के दिन पर उनसे ले ले।

और यही हमारी **श्रेष्ठ श्रद्धांजली होगी।** यही हमारे सच्चे दिल के सुमन अर्पित होगा उनके प्रति के हम वैसे ही बने जैसी हमारी माँ थी। यही हमारे जीवन की शोभा है।

तो आइये आज हम सभी एकबार पुनः उनकी झलक अपने सामने ले आये।

" हम उनके संतान है .. हम भी उन जैसा ही बनेंगे "

और वह समय भी आयेगा जब पुनः हमारा उनसे मिलन होगा। संगमयुग के यह राज सभी को ख्याल रहे।

वो जगदम्बा है .. जगत से मिलेंगी .. तभी तो गुप्त रहकर अपनी तपस्या करके वो जैसे कि अन्तर्धान हो गई थी ...

अब पुनः हम वत्सों का अपनी माँ से मिलन होगा .. यही भविष्य है ...

हम उसकी ओर बढ़ रहे है ...

अब हम उनको **फालो** करके आज के दिन को सफल करे और **जीवन को सफल करे** ...

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org